• वर्ष : 1 • अङ्क : 2 • अक्तूबर-दिसम्बर 2016 • ISSN : 2347-6605

वाक् सुधा

VAAK SUDHA

(अन्तर्राष्ट्रीय त्रैमासिक शोध पत्रिका)

(A Scholarly Peer Reviewed Refereed Journal)

संरक्षक :

प्रो. दलवीर सिंह चौहान

पूर्व अध्यक्ष, संस्कृत-विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बोध गया

आगामी अंक
30 मार्च, 2017

रूपेश कुमार चौहान

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक

द्वारा 47, ब्लॉक ए-3, गली नं. 5, धर्मपुरा एक्सटेंशन, दिल्ली-43 से प्रकाशित एवं डॉल्फिन प्रिंटोग्राफिक्स, 4ई/7, पाबला बिल्डिंग, झंडेवालान् एक्सटेंशन, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित।

दूरभाष संख्या-09555222747, 09540468787, 0991158532, 09266319639

Email: vaaksudha@gmail.com • Website : www.vaaksudha.com

प्रकाशनार्थ सूचना

* लेखक से अनुरोध है कि शोध-पत्र वॉकमैन चाणक्य 905 या क्रुतिदेव फॉन्ट में वर्ड या पेजमेकर में टाइप (टङ्कण) कराकर शोध-पत्रिका के ई-मेल पर प्रेषित करें।
* शोध-लेख **हिन्दी, अंग्रेजी अथवा संस्कृत भाषा में** न्यूनतम 1500 शब्द एवं अधिकतम 5000 शब्द तक मान्य है तथा इसके साथ लेखक का पद-नाम के साथ स्वयं की फोटो (छवि-चित्र) अत्यन्त अनिवार्य है।
* प्रकाशनार्थ प्राप्त लेख सलाहकार परिषद् एवम् संपादक मण्डल की अनुमति के पश्चात् स्तरीय होने पर ही प्रकाशित होगा।
* लेख में यदि चित्र का प्रयोग हुआ है तो उसे भी अवश्य प्रेषित करें।
* **'वाक् सुधा'** किसी भी तरह के परामर्श का स्वागत करती है, इसलिए अपनी प्रतिक्रिया अवश्य दें।
* यह स्पष्ट किया जाता है कि शोध पत्र में प्रस्तुत तथ्य शोध लेखक के अपने विचार हैं तथा इसमें सलाहकार परिषद् एवं सम्पादक मण्डल के विचारों की उद्भावना स्पष्टत: नहीं है। अत: इसके लिए शोध-लेखक स्वयं उत्तरदायी है।
* शोध-पत्रिका की किसी भी सामग्री को प्रकाशक एवं मुद्रक की जानकारी के बिना अन्यत्र प्रकाशन अनुचित होगा।
* **आगामी अङ्क में प्रकाशनार्थ लेख 25 मार्च, 2017 तक अवश्य प्रेषित कीजिए। यदि आप लेख टाइप करा कर भेजने में असमर्थ हैं तो हस्तलिखित प्रति पत्रिका में दिये गये पत्र-व्यवहार के पते पर भेज दें।**
* वर्ष के अंतिम अङ्क के प्रकाशन से पूर्व प्रथम अङ्क पत्रिका की वेबसाइट पर अध्ययन हेतु उपलब्ध हो जाएगा।
* अपेक्षित आर्थिक सहयोग अथवा अंशदान के लिए हम आपके अत्यंत आभारी रहेंगे।
* **कृपया लेख के साथ अपनी पासपोर्ट साइज की फोटो अवश्य भेजें।**

© सर्वाधिकार सुरक्षित

ISSN : 2347-6605

सामान्य शुल्क		सदस्यता शुल्क	
वैयक्तिक शुल्क (एक प्रति)	– `200	संस्थागत सदस्यता शुल्क (वार्षिक)	– `1500
संस्थागत शुल्क (एक प्रति)	– `400	पञ्च वार्षिक शुल्क	– `6000
वैयक्तिक वार्षिक शुल्क	– `800	आजीवन सदस्यता शुल्क	– `15000
सदस्यता शुल्क व्यक्तिगत (वार्षिक)	– `1200		

पत्र-व्यवहार का पता :
मकान नं.-41, सूरज नगर (दुर्गा मंदिर के सामने),
आजादपुर, दिल्ली-110033

सलाहकार परिषद् :

- **प्रो. अरविन्द कुमार पाण्डेय**
  (पूर्व कुलपति, कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा)
- **महामहोपाध्याय प्रो. वेद प्रकाश शास्त्री**
  (पूर्व उप-कुलपति, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार)
- **प्रो. शंकर दयाल द्विवेदी**
  (संस्कृत विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय)
- **डॉ. राजवीर शर्मा**
  (पूर्व प्रोफेसर राजनीति शास्त्र विभाग, आत्माराम सनातन धर्म कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली)
- **प्रो. शम्स-उल-इस्लाम**
  (प्रधानाचार्य, गया कॉलेज, गया, बिहार)
- **प्रो. राम सरेख सिंह**
  (पूर्व विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बोधगया)
- **प्रो. पवन अग्रवाल**
  (हिन्दी एवं आधुनिक भाषा विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय)
- **प्रो. मोहम्मद मंसूर आलम**
  (अध्यक्ष, उर्दू विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बोध गया)
- **प्रो. आभा त्रिवेदी**
  (पाश्चात्य इतिहास विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय)
- **प्रो. राम भरत सिंह**
  (पूर्व विभागाध्यक्ष, राजनीति शास्त्र, मगध विश्वविद्यालय, बोधगया)
- **प्रो. रामप्रवेश कुमार**
  (संस्कृत विभागाध्यक्ष, मगध विश्वविद्यालय, बोधगया)
- **डॉ. सोहनपाल सुमनाक्षर**
  (राष्ट्रीय अध्यक्ष, भारतीय दलित साहित्य अकादमी एवं प्रसिद्ध दलित चिंतक)
- **डॉ. विक्रमादित्य राय**
  (अध्यक्ष, समाज-शास्त्र विभाग, डी.ए.वी.पी.जी. कॉलेज, (बी.एच.यू.) वाराणसी
- **डॉ. इन्द्र नारायण सिंह**
  (बौद्ध अध्ययन विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय)
- **प्रो. राजेश रंजन**
  (पालि विभाग, नालन्दा नव-महाविहार)
- **डॉ. पतञ्जलि कुमार भाटिया**
  (संस्कृत विभाग, पी.जी.डी.ए.वी. कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय)
- **प्रो. सत्यदेव पोद्दार**
  (इतिहास विभाग, त्रिपुरा केन्द्रीय विश्वविद्यालय, त्रिपुरा)
- **प्रो. काशीनाथ जेना**
  (राजनीति-शास्त्र विभाग, त्रिपुरा केन्द्रीय विश्वविद्यालय, त्रिपुरा)

सम्पादक मंडल :

- **डॉ. शाहिद तस्लीम**
  (असिस्टेंट प्रोफेसर, उज्बेक भाषा विशेषज्ञ, जामिया मिलिया इस्लामिया, दिल्ली)
- **डॉ. कृष्ण लाल**
  (सेवानिवृत्त प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, अरविन्दो कॉलेज (प्रात:), दिल्ली)
- **डॉ. रसाल सिंह**
  (असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, किरोड़ीमल कॉलेज, दिल्ली)
- **डॉ. शंकर नाथ तिवारी**
  (असिस्टेंट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, त्रिपुरा केन्द्रीय विश्वविद्यालय, त्रिपुरा)
- **डॉ. मनोज कुमार सिन्हा**
  (असिस्टेंट प्रोफेसर, वाणिज्य विभाग, पीजीडीएवी महाविद्यालय (प्रात:), दिल्ली)
- **लाजपत राय**
  (असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति शास्त्र, सत्यवती महाविद्यालय (प्रात:), दिल्ली)
- **डॉ. चंद्रशेखर पासवान**
  (बौद्ध अध्ययन एवं सभ्यता विभाग, गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय, ग्रेटर नोएडा)
- **उमेश कुमार**
  (इतिहास विभाग, श्रद्धानन्द कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली)
- **डॉ. राम प्रमोल कुमार**
  (संस्कृत विभाग, विश्व भारती विश्वविद्यालय, शान्ति निकेतन, बंगाल)

सम्पादक :
डॉ. रूपेश कुमार चौहान
मो. 9555222747, 9266319639

सहायक सम्पादक :
डॉ. राजेश कुमार
मो. 9555666907, 8527907638

उप-सम्पादक :
डॉ. राम किशोर यादव
मो. 9871600448

विधिक सलाहकार :
अरुण कुमार शुक्ला

तकनीकी सलाहकार :
स्मित मनहर *(बी.टेक.)*

मैनेजिंग डायरेक्टर
ठाकुर प्रसाद चौबे
मो. 9810636082

ग्राफिक डिजाइनर :
कवल मलिक
जे.डी. कंप्यूटर्स, मो. 9818455819

- सभी पद अवैतनिक एवं परिवर्तनीय हैं।
- **'वाक् सुधा'** से संबंधित सभी विवादास्पद मामले केवल दिल्ली न्यायालय के अधीन होंगे।
- सारे भुगतान मनीआर्डर : चेक/ बैंक ड्राफ्ट **'वाक् सुधा'** के नाम से किए जाएं। कृपया दिल्ली से बाहर के चेक में बैंक कमीशन के 35.00 रुपये अतिरिक्त जोड़ें।

अनुक्रमणिका

सम्पादकीय 6

वेद संरक्षण के उपाय 7
डॉ. करुणा आर्या

Buddhism –A Religion, Crafted for Social Justice -------- 11
Vishwajit Singh

वैदिक वाङ्मय में राष्ट्रीयता एवं स्वतन्त्रता की भावना का स्वतन्त्रता संग्राम पर प्रभाव 19
डॉ. करणसिंह चौहान

धर्म और अधर्म एक दृष्टि 23
जितेन्द्र पाण्डेय

1979-1989 के दौर में सफ़दर हाश्मी का जीवन संघर्ष और उनका नुक्कड़-नाटक 25
आलोक कुमार

रक्षत गङ्गाम महाकाव्य में प्रकृति की अमूल्य धरोहर तथा धर्मसिद्धि के साधन स्थलों का एक अध्ययन 27
प्रेमपाल सिंह

भारत में चीनी तीर्थ यात्रियों/बौद्ध विद्वानों का आगमन (पांचवीं शताब्दी तक) 31
डॉ. एम.एम. रहमान

हाशिए के विरुद्ध 35
डॉ. यशपाल

हर्षचरित में मीमांसा 44
देवात्मा दुबे

सल्तनत काल में स्थापत्य कला (1206 ई.-1526 ई.) 46
कुमार पंकज

"Nothing Happens, Nobody Comes, Nobody Goes": A Study of Time, Space and Existence in Becket's Waiting for Godot -------- 50
Seema Verma

राष्ट्रीय जागरण में निराला की कविताओं को योगदान 54
डॉ. सीमा गौतम

Origin of Rajputs : Interim Reflections -------- 61
Dr. Narender Kumar Pandey

ऋषि-तत्त्व में वैज्ञानिक दृष्टिकोण : 'महर्षिकुलवैभवम्' एवं वैश्विक परिप्रेक्ष्य 64
डॉ. दया शंकर तिवारी

नाट्यलक्षण : एक समीक्षा (भरत एवं भरतेतर आचार्यों के सन्दर्भ में) 67
विकास कुमार

नेपाल के अभिलेखों का सर्वेक्षण एवं परिचय 75
किरण

वेदों में वर्णित राष्ट्रीयता एवं लोकतंत्र 77
डॉ. दिलीप कुमार झा

उषा प्रियंवदा के कथा-साहित्य में गृहिणी जीवन 80
राज कुमारी

वैदिक धर्म की उपयोगिता (विश्व-शान्ति के लिए वेद) 84
डॉ. सत्यकाम शर्मा

दिल्ली विश्वविद्यालय की छात्राओं की शिक्षा छोड़ने की परिस्थितियां : चुनिन्दा महाविद्यालयों का अध्ययन 89
संजय कुमार, मधुमिता चक्रवर्ती, अमरीन

मध्यकालीन भारत में जातियों का पुनरोद्‌भाव : एक समीक्षा 93
डॉ. नरेन्द्र कुमार पाण्डेय

Why does Buddhism emphasize on 'Emptiness'? -------- 95
Hyeran Lee (Jinuk)

लोकतंत्र एवं इसके आयाम 99
संजीव कुमार सिंह/सह-लेखक-प्रो. गोकुल प्रसाद सिंह

सूफी काव्य चांदायन में नारी भावना का मनोवैज्ञानिक अध्ययन 103
रीना

स्त्री दर्द और दलित विमर्श 107
मंजु रानी

बालमुकुन्द गुप्त : हिन्दी गद्य के उन्नायक/निर्माता ... 110
अमित कुमार पाण्डेय

Roll of Income Growth in the purchasing of four wheelers regarding compensation of land Acquisition -------- 114
Naveen

अनुमितिकारणकलाप : किरणावली के परिप्रेक्ष्य में ... 119
ओमनाथ बिमली

हजारीप्रसाद द्विवेदी का संस्कृति विषयक चिंतन 130
मनीष कुमार

पौराणिकता बनाम प्रगतिशीलता का साहित्य-'संस्कार' 133
विनय कुमार

काव्यप्रकाशकार की दृष्टि में भवभूति 137
डॉ. रंजन कुमार त्रिपाठी

गुप्तकालीन बौद्ध-चित्रकला में हीनयान एवं महायान 141
डॉ. कामाख्या नारायण तिवारी

भविष्य के भारत में आदिवासी 144
डॉ. बन्ना राम मीना

वैदिकवाङ्मये कृषिविज्ञानम् 149
डॉ रणजित बेहेरा

बिहार के युवा कथाकारों की स्त्री-दृष्टि 153
ज्योत्स्ना कुमारी
डायरी-साहित्य : सैद्धांतिक विवेचन 157
अजीत कुमार
डॉ. रामविलास शर्मा और उनकी तार सप्तक
की कविताएं 162
डॉ. सरिता कश्यप
प्रगतिवादी उपन्यासकारों की चरित्र-सृष्टि 165
डॉ. बबिता कुमारी
'जागते रहो सोने वालो' काव्य-संग्रह की
समीक्षात्मक अध्ययन 169
साक्षी
'कविता लौट पड़ी' (कैलाश गौतम)
एक समीक्षात्मक अध्ययन 173
अभिषेक भारद्वाज
भर्तृहरि दर्शन में तत्त्वमीमांसा 178
डॉ. सोमवीर
बौद्ध धर्म और कपिलवस्तु के शाक्यः 181
विजय अरोड़ा
स्याद्वाद : सामाजिक समन्वयक एवं
द्वन्द्व निवारक सिद्धान्त 184
डॉ. आयुष गुप्ता
योग एवं स्वास्थ्य 187
डॉ. कर्मवीर
मध्यकालीन सामाजिक संरचना और
पितृसत्ता की मौजूदगी 192
रामजी लाल
नैषधचरित में वर्णित धार्मिक संदर्भ 197
अमोघ रंजन पाठक
मृद्भांडीय परंपरा का उद्भव एवं विकास 201
डॉ. एम.एम. रहमान
मधुसूदन सरस्वती का व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व.............. 203
डॉ. राजेश कुमार
शिक्षा वही जो रोजगार दिलाये 207
आशा यादव
दलितों की सामाजिक समस्याएँ 209
डा. उषा कुमारी
नागेशभट्ट की दृष्टि में नामार्थ-विचार 212
डॉ. रवि प्रभात/रमिन्दर कौर
प्राचीन भारतीय साहित्य 215
जसपाली चौहान
आगम और भारतीय अवधारणा 219
सुबोध कुमार मिश्र
Rajagaha And Veluvana As Described
In The Pali Literature ---------------------------- 222
Dr. Susmita Vyas
सूरकाव्य की प्रासंगिकता 225
रिंकु कुमारी
हिन्दी का भविष्य 229
डा. उषा कुमारी
अवधारणा की सैद्धान्तिकी : दलित साहित्य
के परिप्रेक्ष्य में 231
डॉ. ललित मोहन
दलित साहित्य : अवधारणात्मक विश्लेषण 235
डॉ. ललित मोहन
अशोक के धम्म का सार 242
सत्येंद्र कुमार
Buddhism and Human Life ------------------------------ 246
Hans Raj
Buddhist Approach to Over Environmental Crisis --- 249
Rajendra Kumar
भूमंडलीय परिप्रेक्ष्य में बौद्ध-धर्म की प्रासंगिकता;
थाईलैंड के विशेष संदर्भ में 256
डॉ. कामाख्या नारायण तिवारी
आधुनिक भारतीय भाषा : गुजराती 259
जसपाली चौहान
हिन्दी के दलित साहित्य में दलित स्त्री
मुक्ति की चाह 262
डॉ. लक्ष्मी देवी
देवीभागवत का महापुराणत्व 265
डॉ. प्रमोद पाण्डेय
अष्टक वर्ग जन्य फल विवेचन 269
अञ्जू कुमारी
प्रयोग और प्रगतिशीलता के संदर्भ में
शमशेर की कविता 275
कौशलेन्द्र कुमार
छायावादी काव्य : परिवेश, प्रेरणास्रोत व प्रभाव...... 279
डॉ. विनोद कुमार चौबे
Gender Budgeting providing fillip to women empowerment: An analysis of important women welfare schemes and Union Budget 2017-2018 ------------------------------------- 283
Pankaj Choudhary
Productivity and Semantics of Wālā Expressions in Hindi/Urdu ---290
Vijay Kumar Kaul
भाषाविज्ञानव्याकरणविज्ञानयोः समन्विताध्ययनम्......... 296
डा. छाया रानी
तुलसीदास और केशवदास की राम काव्यधारा :
एक विवेचनात्मक अनुशीलन 300
मनु कुमारी
India, Its Neighbours, and the World ------------------ 302
Dr. Meeta Nath
Women at the time of Buddha -------------------------- 305
Dr. H.K. Baluja
**Historical imagination in school children:
Remembering Collingwood** ----------------------------- 309
Ashish Ranjan
**A Poet in Dara Shukoh : An Exploration of
Wahdat-ul-Wujud** --------------------------------------- 315
Dr. Mridula Jha
**Women's Movement: Telling Its Tale Since
the 1970s** --- 319
Dr. Pratibha
**Governance and public service delivery in India:
Challenges and Consequences** ------------------------- 326
Dr. Pooja Paswan
ब्रॉडवे थियेटर, ऑफ-ब्रॉडवे थिएटर और सातत्यता
के सूत्र 335
डॉ. सीमा जैन
**Social Attributes and Diagnostic Pictures of Sport,
Culture and Society** --------------------------------------- 339
Dr. Pramod C. Sharma

सम्पादकीय

वाक् शब्द वच् (बोलना) अर्थवाली धातु में क्विप् प्रत्यय से निष्पन्न हुआ है। भाषा-वैज्ञानिक दृष्टि से अंग्रेजी के Voice शब्द से सर्वथा साम्य रखता है, क्योंकि अंग्रेजी का c वर्ण कहीं क् तथा कहीं च् के रूप में भी उच्चरित होता है। भाषा-वैज्ञानिकों ने वाक् को भाषा से भिन्न माना है। उनके अनुसार भाषा मूर्त किन्तु वाक् अमूर्त, भाषा सामाजिक किन्तु वाक् वैयक्तिक, भाषा समरूपी किन्तु वाक् भौतिक है, परन्तु भाषा वाक् पर ही आधारित है, वाक् ही किसी भाषा का बोधक होता है। अतः भाषा के लिये वाक् का प्रयोग प्रायः चलता रहता है।

जो भी हो, वाक् भाषा का मूर्त रूप है। साधारण भाषा में इसे बोली भी कहा जाता है। यह बोली मानव जीवन के व्यवहार का मूल साधन है। प्रवृत्ति-निवृत्ति का हेतु है। बड़ी चमत्कारिणी है ये बोली। कभी आग पर घी गिराती है, तो कभी आग पर पानी। कभी जले पर नमक गिराती है, तो कभी बर्फ। कभी रोते को हंसाती है, तो कभी हंसतों को रुलाती है। कभी जीने का मार्ग सुझाती है, तो कभी अंधेरे में भटकाती है। क्या-क्या नहीं कराती है ये बोली? अतः **''ऐसी बानी बोलिये मन का आपा खोय, औरन को शीतल करे आपहुं शीतल होय।''** कबीर दास की अमृत वाणी का सार्थकत्व सिद्ध करने वाली यह ''वाक् सुधा'' भारत में सर्वत्र वाक् सुधा की वृष्टि करे, यही हमारा उद्देश्य है।

यह वाक् प्रायः सभी दर्शनों के चिन्तन का विषय है। सांख्य, योग, न्याय और मीमांसा वाक् (शब्द) को स्वतंत्र प्रमाण के रूप में स्वीकार करते हैं। चार्वाक दर्शन में वाक् का अन्तर्भाव प्रत्यक्ष में, बौद्ध एवं वैशेषिक दर्शन में वाक् का अर्न्तभाव प्रत्यक्ष तथा अनुमान में किया गया है। न्याय के अनुसार, जो वस्तु जैसी है उसका वैसा ही उपदेश आप्तोपदेश है। तर्कभाषाकार के अनुसार, यथाभूतार्थ का उपदेष्टा पुरुष आप्त कहलाता है तथा ऐसे पुरुष के वाक्य आप्तवाक्य हैं। विस्तारभय से अधिक व्याख्या न कर इसकी दो व्याख्याओं को ही उचित मानता हूँ। एक के अनुसार ईश्वरीय उपदेश, दूसरी के अनुसार लौकिक उपदेश। यथा **''आप्तः उपदेशः वाक्यं वा''** इस प्रकार प्राप्त किया हुआ उपदेश या वाक्य आप्तोपदेश या आप्तवाक्य है। अतः जो उपदेश ईश्वर से प्राप्त किया हुआ है वही आप्तोपदेश है। इसी के अनुसार सभी धर्मावम्बी अपने-अपने धर्मग्रन्थों को ईश्वरीय उपदेश मानते हैं। भारतीय दर्शन में वेद को अपौरुषेय बताते हुए ऋषियों द्वारा प्राप्त ईश्वरीय ज्ञान माना गया है। दूसरी व्युत्पत्ति के अनुसार **''आप्तं ज्ञानं येन सः तस्योपदेशः वाक्यं वा''** अर्थात् जिसने ज्ञान प्राप्त किया है, उसका उपदेश भी आप्तोपदेश है; एतदनुसार लौकिक महापुरुषों के उपदेश भी आप्तोपदेश हैं। अतः हम उन सभी महापुरुषों, दार्शनिकों, वैज्ञानिकों, समाज-सुधारकों के वाक्यों को भी आप्तवाक्य मानते हैं; जिन्होंने धर्म में विकृति आने पर गहन अध्ययन, मनन, निदिध्यासन द्वारा ज्ञान प्राप्त कर उपदेश किया है; कोई उन्हें भगवान् का अवतार, कोई पैगम्बर, तो कोई गुरु आदि कहता है। उनके वाक्य वेद, पुराण, रामायण, महाभारत, बौद्ध पिटकादि, बाईबल, कुरान और गुरु-ग्रंथ आदि आप्तवाक्य हैं। देश-काल परिस्थित्यनुसार अपवादस्वरूप दोषादि को छोड़कर वे सर्वथा निर्दुष्ट हैं। उनकी वाणी स्वतः वाक् सुधा है। हम नीर-क्षीर विवेक द्वारा उनकी वाक्-सुधा को अपनी ''वाक् सुधा'' में प्रकाशित कर पाठकों को श्रोत्रपेय वाक् सुधा का पान कराना चाहते हैं, ऐसे ही शोध-पत्रों की हमें अपेक्षा है।

वाक् सुधा का यह अंक सर्वाधिक विशाल कलेवर का है। जैसी हमें अपेक्षा थी, उससे कहीं अधिक स्तर पर शोधार्थियों का सहयोग एवं समर्थन प्राप्त हुआ है, जिसके लिए वाक् सुधा परिवार उनका अत्यंत आभारी है। बहुत से शोधार्थियों के शोध पत्र कतिपय कारणों से इस अंक में प्रकाशित न कर पाने के लिए क्षमा प्रार्थी हैं। आशा करते हैं कि उन्हें हमारी समस्या का भान होगा। विद्वानों से अनुरोध है कि वे अपने लेख भेजकर भविष्य में भी हमें कृतार्थ करें।

- डॉ. रूपेश कुमार चौहान

Refereed Journal • ISSN : 2347-6605